कृष्णभक्ति साहित्य की प्रवृत्तियों का शेषांश

प्राध्यापक - डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग
एल०एस० कॉलेज, जहानाबाद

(3) रस चित्रण :- हिन्दी का कृष्णभक्ति साहित्य रस चित्रण की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। वैसे तो सहृदय समालोचकों ने संपूर्ण कृष्णभक्ति साहित्य में एक ही रस को प्रधान माना है और वह है ब्रजरस। इसे भक्तिरस भी कह सकते हैं। किन्तु पिंगलशास्त्र की दृष्टि से देखें तो यहां पर वात्सल्य शृंगार एवं शांतरस का पूर्ण परिपाक हुआ है। समस्त कृष्णभक्त कवि जीवन में वैरागी रहे हैं। सूरदास, नन्ददास, छीतस्वामी, कुंभनदास प्रभृति भक्तों ने जीवन के चरम सत्य के संधान के क्रम में ही वैराग्य का आश्रय लिया था। इसीलिए इनके पदों में जीवन के प्रति निर्वेद का भाव साफ-साफ देखा जा सकता है। 'हरि हौं सब पतितन को नायक' या 'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै' या 'हरि हौं सब पतितन को टीको' जैसे पदों में उनकी वैरागी वृत्ति स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। भक्ति साहित्य का बड़ा भाग चाहे वह रामकाव्य रहा हो या कृष्णकाव्य धारा - शांतरस से भरापूरा है। किन्तु यही इसकी इति नहीं है। जैसा कि बताया गया है कि वल्लभ सम्प्रदाय में कृष्ण के दो ही रूप स्वीकार्य हैं- बालक और किशोर। भक्त कवियों ने इन दोनों ही रूपों में श्रीकृष्ण की जैसी अभ्यर्थना की है और उन लीलाओं का जैसा चित्रण किया है वह अलौकिक है।

कृष्ण की बाललीलाओं का चित्रण जैसा सूरसाहित्य में हुआ है वह हिन्दी ही नहीं अन्य वैश्विक साहित्य में भी हुआ होगा इसमें संदेह है। सूर ने बालकों की हरेक सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव भंगिमाओं का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि अनुभावक दंग सा रह जाता है। यशोदा बाल कृष्ण को सुलाने का यत्न कर रही हैं उसका चित्र दर्शनीय है -

"यशोदा हरि पालनै झुलावै।
हलरावै, दुलरावै, जोइ-सोइ कछु गावै।
मेरे लाल को आउ निंदरिया काहे न आनि सुलावै।"

इसी प्रकार कृष्ण के भोजन करते, घुटनों पर चलते, मिट्टी खाते, उनके धूल धूसरित देह की शोभा इत्यादि का अत्यंत हृदयग्राही वर्णन हुआ है। उस वर्णन में ऐसी गहरी आत्मीयता और चित्रण की सफलता है कि हम भूल ही जाते हैं कि यहां कृष्ण सजीव उपस्थित नहीं हैं। इस दृष्टि से तो सूर ने ऐसी सफलता पाई है कि शास्त्रकारों को

वात्सल्य नामक एक नये रस को मान्यता देनी पड़ गयी।
वैसे ही कृष्ण के किशोर जीवन की लीलाओं का भी अत्यंत मनोहारी वर्णन इस साहित्य में मिलता है। राधा-कृष्ण के प्रथम परिचय की लीला दर्शनीय है —

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी।
गये स्याम रवि-तनया कैं तट अंग लसति चंदन की खोरी।
औचक ही देखी तंह राधा नैन बिसाल भाल दिये रोरी।
सूर स्याम देखत ही रीझे नैन-नैन मिलि परी ठगोरी।

इसके बाद क्रमिक रूप से राधा-कृष्ण का प्रेम परवान चढ़ता चला जाता है और अनेक संयोगकालीन लीलाओं का साक्षी बनता है। पुनः कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद विप्रलंभ श्रृंगार लीला के दर्शन होते हैं — राधा एवं गोपियों के साथ ग्वाल बाल, ब्रज की गायें, बछड़े, पेड़-पौधे, लता-गुल्म यहाँ तक कि यमुना जी — विरह के ताप से झुलस रहे हैं - 'लखियत कालिन्दी अति कारी' या 'निसि दिन बरसत नैन हमारे' 'सन्देसो देवकी सों कहियो' - जैसे अनेक पदों में कृष्ण के वियोग का इतना विराट वर्णन मिलता है कि सुधी पाठक उसके प्रवाह में बह जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रस नियोजन में कृष्ण भक्ति साहित्य अपने आप में अनूठा है, बेमिसाल है।